३०८३

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळें.

—ः हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ५३५:वे ५३(२९)

ग्रंथ नाम गीतागुरु.

विषय म. वेदांत.

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

क्र.नं. २८

मराठी

वेदांत

निजानन्द - गुरुगीता

४३४ वे 33

क-हाड

Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.
" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

(1)

गु० १ ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ ॥ गीता

नमो सद्गुरु परब्रह्म ॥ तुं निर्विकल्प अकल्प हं म ॥ ह
रह्रदय विश्रामधाम ॥ निजमूर्ति राम तुं स्वये ॥ १ ॥
तुं साउनुग्रह जय ॥ तयाना हि काहि साकडे ॥ दर्शने मोक्ष हृदये ॥ तुझेनि पडिपाडे
तुं चितु ॥ २ ॥ कोणे येके दिवसि ॥ श्रीसदाशिव
कैलासि ॥ ध्यानरूप असता मानसि ॥ पुसे तया
सि पार्वति ॥ ३ ॥ जय जया जि परात्परा ॥ जगद्गुरु

Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai, " Joint Project of"

कर्पूरगोरा ॥ गुरू दिक्षा निर्विकारा ॥ श्रीशंकरा

(2) मजदेयि ॥४॥ कवणे मागे जिस्वामी ॥ जिव ब्रह्म

रूप होति तेमी ॥ पुसतसे तरि सांगीजे तुह्मि ॥ अंत

मीक ब्रह्म जैसे ॥ कृपाकरा विश्वनाथ नाथा ॥ ह्मणे गो

न्निचरणी ठेविला माथा ॥ नासोनिया भव व्यथा

कैवल्य पंथा मदावि ॥ [illegible]स्वरह्मणे वो देवि ॥ तु ॥१॥

सि अवडिमाते वदवि ॥ लोकोपकार प्रश्न पूर्वि ॥

जो न केला देविदानवि ॥७॥ तरि हुर्लक्ष याविसु

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

॥गु० वनात॥ तेतुऐकेबोनिश्चित॥ सद्गुरुब्रंह्मसदो ॥२०
दित॥ सत्यसत्यवरानने॥८॥ वेदशास्त्रपुराणा॥
(2A) मंत्रयंत्रादिविद्यानना॥ करितातीर्थव्रततपसा
धना॥ भवबंधमोचनानपवाति॥ शैवशाक्तआग
मादिके॥ अनेकमतेअपभ्रंशके॥ समस्तजीवा
श्यांतिदायके॥ मोक्षप्रापकेनव्हतिच॥१०॥ जया
चाउपराभक्ति॥ तेयासद्गुरुशाबावायेकाति॥ गुरु
त्वनजाणाति॥ मूढमतिजनकोणी॥११॥ होवोनि

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

(3)

निःसङ्गाय ॥ ज्ञावावे सद्गुरु पाय ॥ भवसिंधुत्तरूयो ॥ रू

पाय ॥ तात्काळ होय जड जिवा ॥ १२ ॥ गुह्य विद्या

जन्म माया ॥ अज्ञान संव्हारिल जिवया ॥ मोहांधका

रगुरुसुर्या ॥ सद्गुरु या वया मुखके चे ॥ १३ ॥ जिव

ब्रंह्मत्या चिया कृपा ॥ होति निरसो निसर्व पापा ॥

सद्गुरु स्वयं प्रकाश रिपा ॥ शरण निर्विकल्प रिघावे ॥ २ ॥

॥ १४ ॥ सर्व तिर्थाचे माहेर ॥ सद्गुरुचरण तिर्थ निरंतर ॥

सद्भावे सत्सीषनर ॥ ज्ञावि परपार पावेल ॥ १५ ॥ शो

॥गु० षयापापपंकाचे॥ ज्ञानतेजकरिसाचे॥ वंदितांच रु॥१०
रणतीर्थसद्गुरूचे॥ सवाह्यविषयकाय॥१६॥ अज्ञा
नमुळहरण॥ जन्मकर्मनिवारण॥ नानासिध्दिचे
(3A)
कारण॥ गुरूचरणतीर्थ ते॥१७॥ गुरुचरणतीर्थप्रा
ज्ञान॥ गुरूअज्ञानचि रसांजन॥ गुरूमोर्तिचे अंत
रिध्यान॥ गुरूमंत्रवदनजपेसदा॥१८॥ गुरूसा
न्नीध्यतोकाशीवास॥ जान्हविचरणोदकनिःश
ष॥ गुरूविश्वेश्वरनिर्विशेष॥ तारकमंत्रउपदेशातें॥१९॥

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan Mumbai.

गुरुचरणातिर्थपडेसिरि ॥ प्रयागरन्मानेतनिर्थारि ॥
गयागदाधरसबाह्यांतरि ॥ संर्वातरिसाधका ॥२०॥
(५) गुरुमोतिनिस्यस्मरे ॥ गुरुनामजपेअरे ॥ अगुरुआ
ज्ञापाळकनरे ॥ सणिजेहुसरेगुरुविण ॥२१॥ गुरु
स्मरणमुखिराहो ॥ ताचिब्रंह्मरुपपाहे ॥ गुरुमोति
ध्यानिवाहे ॥ जेसिकोहेसेरणि ॥२२॥ वर्णाश्रमधामी
सत्किर्ति ॥ वाटवाविसहूति ॥ अंन्यत्रत्यज्जुनिगुति ॥ ॥३॥
सद्गुरुभत्किकरावि ॥२३॥ अनन्यभावेगुरुसिभज
ता ॥ सुलभपरमपदतत्वता ॥ तस्मातत्सर्वप्रयत्न

गु० ॥ अता ॥ सद्गुरुनाथा अराधि ॥ २४ ॥ गुरुमुखिचे माहा रु० ॥
वाक्य बिज ॥ त्रैलोकिनाचे भोज ॥ तो होय पुज्य सुर
नं० नरा ॥ २५ ॥ गुकार तो अंधःकार ॥ रुकार वर्यावर्या
तो दिनकर ॥ स्वयं प्रकाश तेजा समोर ॥ नराहे तिमिर
(4A) क्षिया क्षरि ॥ २६ ॥ प्रथम गुकार शब्द ॥ तो गुण मायिमा
यास्पद ॥ रुकार तो ब्रह्मानंद ॥ करि विछेद मायचा ॥ २७ ॥
असे गुरुपद श्रेष्ठ ॥ देवादिकां उत्कृष्ठ ॥ गण गंधर्वादि
वरिष्ठ ॥ महिमा स्पष्ठ नेणति ॥ २८ ॥ शाश्वत सर्वि सर्व
दा हि ॥ गुरुपरते तत्व नाहि ॥ काया वाचा मने पाहि ॥

Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "Joint property of the Rajwade

।।गु०।। जिवितंतेंहिसमपावे ।।२९।। देहादिभुवनत्रयसम रू०।।
स्त ।। इतरपदार्थनासिवंत ।। वाचोनियाविमुखहोत ।।
(5) अधःपातघडेतया ।।३०।। म्हणोनियाआराध्यावाश्री
गुरू ।। करोनिदीर्घदंडनमस्कारि ।। निर्लज्यहोऊनि
परंपारू ।। भवसागरउतरावा ।।३१।। आत्मदारादिक
चैव ।। निवेदनकरूनिसर्व ।। हानाहिजनयाअनुभव ।।
त्यासिवाटेअभिन्नवचरानेने ।।३२।। जेसंसारवृक्षा ।।४।।
रूढजाले ।। पतननर्कार्णविपावले ।। तेगुरुरायें
ज उद्धरिले ।। सुखिकेलेनिजस्पर्शानि ।।३३।। ब्रंह्मावि

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

म०गु०॥ ब्यासदाशिव॥गुरुरूपतेस्वयमेव॥गुरुपरब्रंह्म रु०॥
सर्वथैव॥गुरुगौरवनवर्याच॥३४॥अज्ञानतिमि
रेअंध॥ज्ञानांजनशलाका प्रसिध॥दिव्यचक्षुशुध
बुध॥माहानिधदासवविळा॥३५॥अखंडमंडला
कार॥जेणेव्यापिलेचराचर॥तेयपदिकेलेस्थि
र॥नमस्कारतयागुरुवर्या॥३६॥श्रुतिसारसिरो
रत्न॥चरणांबुजपरमपावन॥वेदांतकमळयी
चिद्रानु॥तयानमनगुरुवर्या॥३७॥ज्याच्यास्म
रयामात्रेज्ञान॥साधकाहोयउत्पन्न॥तेनिजसं

पतिज्ञाण ।। दिधलि संपुर्ण गुरुराये ।।३८।। चैतन्य
शाश्वत शांत ।। नित्य निरंजन अच्युत ।। नाद बिंदु काळा
तित ।। न मने प्रयतिपा तगरुवर्या ।।३९।। ज्ञान ज्ञाति
(6) सप्तारूढ ।। तत्व मार्ग सुचित दृढ ।। भुक्ति मुक्ति दा
ता प्रौढ ।। सद्गुरु गुढ सुखदानि ।।४०।। अनेक जन्मि
चे सुकृत ।। निरहंकृति निरहेत ।। तरि च प्रबोध प्राप्त
जरि श्रीगुरु हस्त मस्तकि ।।४१।। जगन्नाथ जगद्गुरु ।।५।।
येक ।। तो माझा स्वामि देसिक ।। ममात्मा सर्वभूत
व्यापक ।। वैकुंठनायक श्रीगुरु ।।४२।। ध्यानं नमू

A joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

गु० ॥६॥ मुळगुरुराय ॥ पूजामूळ ~~मुखे~~ गुरुपाय ॥ मंत्रमूळ ॥२०॥
निःसंशाय ॥ मोक्षमूळ गुरुकृपा ॥ ४३ ॥ सप्तसींधु
अनेकतिर्थ ॥ स्नानेपानेजेफळ प्राप्त ॥ येकबिंदुस
(6A) मानपावति ॥ सद्गुरुचरणातीर्थेच्या ॥ ४४ ॥ ज्ञानेवि
णसायुजपद ॥ नलभ्यलाभेअगाध ॥ सद्गुरुभ
क्तिनेप्रबोध ॥ स्वतसिध्दपाविजे ॥ ४५ ॥ सद्गुरुहु
निपरात्पर ॥ नाहिनाहिंसाचार ॥ नेतिशब्देनि
रंतर ॥ श्रुतिसाचारगर्जति ॥ ४६ ॥ मदहंकार
गर्वकरुनि ॥ विद्यातपबलान्वीतहोवोनि ॥

संसारकुव्हारावर्तिपडोनि ॥ नानायोनिभ्रमताति ॥४७॥ नमुक्तदेवगंधर्व ॥ नमुक्तयक्षच्यारयादि सर्व ॥ सद्गुरूकृपेनअपूर्व ॥ सायुज्यवैभवपावीजे ॥ ४८॥ ऐकवादेविध्यानसेस्व ॥ सर्वानंदप्रदायक ॥ मोहोमायार्णवतारक ॥ चितस्वकारकसद्गुरू ॥ ४९॥ ब्रंम्हानंदपरमाद्भुत ॥ ज्ञानमुर्तिद्वंद्वातित ॥ नि रतिशायस्वसंतत ॥ भासितसद्गुरु ॥५०॥ नित्य शुध्यनिराभास ॥ नित्यबोधचिदाकाश ॥ नित्यानंद स्वयंप्रकाश ॥ सद्गुरुइशसर्वाचा ॥५१॥ हृदयकम

(७) ॥६॥

॥गु० ळसिंहासनि ॥ सद्गुरुमूर्तिचिंता विध्यानि ॥ श्वेतांबर ॥२०॥
दिव्यभूषणी ॥ चिद्रत्नकिरणी सजोशीत ॥ ५२ ॥ आनं
दमानंदकर प्रसन्न ॥ ज्ञानस्वरूपनिजबोधपुर्ण ॥ भव
(7A) रोगभेषजज्ञान ॥ सद्वैद्य चिंतन सद्गुरु ॥ ५३ ॥ सद्गुरु
परतत्व अधिक आहि ॥ ऐसा पदार्थ नाहि ॥ अवलो
किता दिशा दाहि ॥ न दिसति हि त्रिभुवनि ॥ ५४ ॥ प्र
ज्ञाबळे शास्त्रोत्तर ॥ गुरुसि विवादति नर ॥ ते भोगि
ति नरक घोर ॥ यावच्चंद्र दिनमणी ॥ ५५ ॥ अरण्यनि
र्जळस्थानि ॥ भ्रमति ब्रह्मराक्षस होवोनि ॥ गुरुसि

Joint project of the Rajawade Samshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(४)

बोलतिउथ्यतिवाणी॥येकवचनिसर्वदा॥५६॥सि
ष्यतादेवऋषिकाळ॥सद्गुरूरक्षीनलगतापळ॥दी
नानाथदीनदयाळ॥भक्तवत्सलश्रीगुरू॥५७॥स
द्गुरूचाशिष्यहोता॥देवऋषिमुनिलत्वता॥रक्षिते
हिदुर्वार्ता॥मुर्खहिसर्वथानायकति॥५८॥मंत्र
राजदेवि॥गुरूहेदोनिसदारेखरवि॥वेदार्थवच्चने ॥७॥
जाणावि॥ब्रंह्मपदविसत्यदी॥५९॥श्रुतिस्मृतिनजा
णति॥गुरूभक्तिचिपरमप्रीति॥तेसंन्यासीनिश्चीती॥
इतरदुर्मतिवेशधारि॥६०॥नित्यब्रंह्मनिराकार॥

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

॥गु०

निर्गुणबोधपरात्पर ॥ तोसद्गुरूपुर्णअवतार ॥ दीपा
सीदीपांतरनाहिंजैसे ॥ ६१ ॥ गुरुकृपाप्रसादे ॥ नी
जात्मदर्शनस्वानंदे ॥ पाउलिपुर्णपदे ॥ पेलतिदोदे
मुक्तिसि ॥ ६२ ॥ अब्रह्मस्तंभपर्यंत ॥ स्थावरजंगमा
पंचभूत ॥ सच्चीदानंदाद्वय अव्यक्त ॥ अच्युतानं
दासद्गुरु ॥ ६३ ॥ परात्परध्यान ॥ नित्यानंदसनातन ॥
हृदयसिंव्हासनिंबैसान ॥ चितिचींतनकरावे ॥ ६४
अगोचरआगंम्यसर्वगत ॥ नामरूपविर्जीवित ॥
निःशब्दज्ञायानिश्चात ॥ ब्रह्मसदोदितपार्वति ॥ ६५ ॥

॥ २० ॥

(8A)

A joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

अंगुष्टमात्रपुरुष ॥ हृदयीध्याता स्वप्रकाश ॥ तेथे
स्फुरतिभावविशेष ॥ निर्विशेषपार्वति ॥ ६६ ॥ ऐसे
ध्यानकरितानित्य ॥ तादृश्य होय सत्य सत्य ॥ की
(१) ठकीस्मृग्रूठिचिनिमित्य ॥ तद्रूप जालि तें जैसी ॥ ६७ ॥
आवलोकितात यापति ॥ सर्वसंगविनिर्मुक्ति ॥ ये
काकिनिस्पत्र हश्यांति ॥ आत्मस्थी तिराहवे ॥ ६८ ॥ ॥ ६८ ॥
सर्वज्ञपदस्याबोलति ॥ जेयारहिब्रह्महोति ॥ सदा
१ नंदस्वरूपांति ॥ योगीरक्षति पैजेथे ॥ ६९ ॥ उपदश
होतापार्वति ॥ गुरुमार्गेहोयेमुक्ति ॥ ब्रह्मयोगनिका

॥गु० राविगुरुभक्ति॥ हेतुज प्रतिबोलत तसे॥७०॥ जे बोली रु० ॥
लो मितुज॥ ते गुजाचे निज गुज॥ लोकोपकार सहज॥
हेतो उत्तरानेन॥७१॥ लौकिक कर्मे तेहि न॥ तेथे
(9A) केचे आत्मज्ञान॥ गुरुभक्ता सि समाधान॥ पुंण्यपा
वनैकता॥७२॥ तंव यास्तिभावे॥ भवपापठये
मुक्त व्हावे॥ ऐसे बोलत सदाशिवे॥ डोलता अनुभवे
गुरुभक्त॥७३॥ गुरुगीता हृदवि॥ शुध्यतत्वपूर्णपद
वि॥ भवव्याधिविनाशा निस्वभावि॥ स्वयं मेवजपे स
दा॥७४॥ गुरुगीतेचे आक्षरयक॥ मंत्रराज हा सा

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(10)

म्यक ॥ आन्यत्र मंत्र दुःदायकें मुख्यनायक हा मंत्र ॥ ७५ ॥ अनंत फळे पार्वति ॥ गुरूगीता हे पार्वति ॥ सर्वपापविनिर्मुक्ति ॥ दुःखदरिद्रनाशनि ॥ ७६ ॥ काळमृत्युक्षय हर्ति ॥ सर्व संकट नाशकर्ति ॥ यक्षराक्षसप्रेतक्षूति ॥ निर्भय चीति सर्वदा ॥ ७७ ॥ माताव्याधि विनाशनि ॥ विभूति सीधीदायनि ॥ आथवा वसीकरणे मोहनि ॥ पुंपप पावनि सर्वदा ॥ ७८ ॥ कुषअ ॥१॥ ध्ववा दुर्वासना ॥ शाश्र्क्कंबल समसमान ॥ येकाग्र करोनि मन ॥ सद्गुरू ध्यान करावे ॥ ७९ ॥ शुक्लत्रां

Sanshodhan Mandal Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan Mumbai

## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---


**इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे**

राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)

**दूरध्वनी क्रमांक** (०२५६२) २३३८४८

**Email ID** : rajwademandaldhule@gmail.com